बिकती और बिखरती जिंदगी

सिलबिया (बायें) दिल्ली में कहां है यह उसके घरवालों को नहीं पता

'मैंने अपनी आंखों के सामने लड़कियों का बलात्कार देखा है. वे रोती हैं, चिल्लाती हैं और जब गर्भवती हो जाती हैं तो प्लेसमेंट एजेंसी उन्हें निकाल देती है.' यह एक पत्र के अंश हैं जिसे अर्चना केरकेटा नाम की एक युवती ने मानव तस्करी के खिलाफ काम करने वाली कुनकुरी की एक संस्था को तब लिखा था जब जशपुर जिले में लड़कियों को दलालों के चंगुल से छुड़ाने की मुहिम जोर-शोर से चल रही थी. एक दलाल के जरिए खुद भी 5000 रुपये में बेची गई अर्चना ने प्लेसमेंट एजेंसियों की कारगुजारियों और आदिवासियों की लड़कियों के साथ किए जा रहे व्यवहार का खुलासा करते हुए लड़कियों को शोषण से बचाने की गुहार लगाई थी. अर्चना के इस पत्र के बाद जिले के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने प्रशासन को शिकायतों का पुलिंदा सौंपते हुए कार्रवाई का आग्रह किया था. इनकी मांग पर पुलिस-प्रशासन ने कुछ समय तक ध्यान दिया, लेकिन जब बाद में 'जवान लड़कियां अपनी मर्जी से भाग रही हैं' जैसा प्रचार सामने आया तो पुलिस महकमे का नजरिया भी बदल गया.

गुमशुदगी को प्रेम का पचड़ा मानने की वजह से जंगल के फूलों को असमय ही दम तोड़ देना पड़ा है. बगीचा तहसील की महुआडीह गांव में रहने वाली अलोचना बाई दलालों के चंगुल में फंसकर दिल्ली पहुंच गई थी. अलोचना के पिता हेमसाय चौहान ने थाने में शिकायत भी की थी, लेकिन उसकी शिकायत पर ध्यान नहीं दिया गया. अंतत: एक दिन अलोचना की लाश उसके गांव पहुंची. नानदमली गांव की एक लड़की बंसती भी एक प्लेसमेंट एजेंसी में काम करते हुए इधर-उधर भटक रही थी. एक रोज संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी मौत हो गई. 23 अप्रैल, 2006 को बगीचा थाना क्षेत्र के छिपातला गांव की रहने वाली हेमलता टोप्पो की मौत के कारणों का पता अब तक नहीं चल पाया है. इन सारे मामलों में पुलिस मान चुकी थी कि जवान लड़कियां प्रेम के चक्कर में पड़कर निकल गई हैं. प्रेम का बुखार उतरते ही वे घर लौट आएंगी. लेकिन ऐसा नहीं हुआ. कुछ साल पहले जशपुर जिले के आरा पंचायत के आश्रित ग्राम ठुठीअंबा से गायब हुई 11 लड़कियां जब दर-बदर की ठोकरें खाकर गांव लौटीं तो पता चला कि बात कुछ और थी. उनमें से अधिकांश ने कहा कि उन्हें वेतन वाले दिन प्लेसमेंट एजेंसी से जुड़े लोगों की काम पिपासा शांत करनी होती थी. कुछ लड़कियों ने बताया कि कोठियों में मालिकों के बेटे भी उन्हें नोचने-खसोटने का काम करते थे.

ठुठीअंबा गांव की मीना (बदला हुआ नाम) मात्र 12 साल की उम्र में दिल्ली पहुंच गई थी. दिल्ली के प्रीति नगर में काम करने के दौरान उसका शारीरिक शोषण होता रहा. जब वह लौटी तो गर्भवती थी. अभी चंद महीने पहले ही उसने एक पुत्र को जन्म दिया है. गांव की एक अन्य किशोरी जिस प्लेसमेंट एजेंसी के लिए काम करती थी उसका मालिक तो उससे मारपीट करता ही था घर की मालकिन के लड़के भी उसका शोषण करते थे. यह भी जब छह माह पहले गांव लौटी तो उसे गर्भ ठहर चुका था.

गुमशुदगी को पुलिस प्रेम का पचड़ा मानती है. इसके चलते जंगल के फूलों को असमय ही दम तोड़ देना पड़ा है

मानव तस्करी के खिलाफ काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता सेवती पन्ना ने भी जब कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद से दिल्ली की प्लेसमेंट एजेंसियों का सर्वे किया था तो वहां का हाल दिल दहलाने वाला था. सेवती बताती हैं, 'संत अन्ना प्लेसमेंट एजेंसी के पहले कमरे में प्रभु ईशु और क्रास का चित्र लगा था लेकिन अंदर के कमरों में अश्लील चित्र चस्पा थे. कमरों की हालत देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए. लड़के और लड़कियां जिस बेतरतीब ढंग से छोटे-छोटे कमरों में मौजूद थे उसे देखकर कोई भी यह अंदाजा लगा सकता था कि वहां क्या काम होता है.'

आदिवासी महिला महासंघ की समन्वयक ममता कुजूर घरेलू नौकरानियों की सुरक्षा व मानव तस्करी पर रोकथाम के लिए मजबूत कानून बनाए जाने की आवश्यकता पर जोर देती हैं. वे कहती हैं, 'प्रगतिशील समाज का व्यक्ति लड़कियों के घर से बाहर निकलने और उनकी तरक्की का पक्षधर है, लेकिन यह भी देखना होगा कि लड़कियों का सुरक्षा घेरा कैसे मजबूत किया जा सकता है.'

पिता के साथ रहने वाली रामपत्ती को भी दो युवकों ने 3800 रुपये में काजल नाम की एक प्लेसमेंट एजेंसी को बेच दिया था. कोठियों में नौकरानी बनकर काम करने और इधर- उधर की ठोकर खाने के बाद जब रामबत्ती घर लौटी तो उसकी छोटी बहन जसामती दलालों के चंगुल में फंस गई. पिछले तीन साल से जसामती कहां है, किसी को नहीं मालूम.

गरीबी से मजबूर

इस समस्या का एक तार राज्य के इन इलाकों में फैली घनघोर गरीबी से भी जुड़ता है. जसामती के पिता अपनी बेटियों के इधर-उधर चले जाने के लिए अपनी माली हालत को जिम्मेदार मानते हैं. वे कहते हैं, 'एक एकड़ खेत में कभी इतना अनाज नहीं होता था कि सबका पेट भर जाता. पेट काटकर जितना हो सकता था सबके लिए कुछ न कुछ करता रहा. एक गरीब आदमी और क्या कर सकता था. मैं कुछ नहीं दे पाया तो दूसरी लड़की भी चली गई.' (बातचीत के दौरान बुधराम की आंखें भर आती हैं) अंबिकापुर और जशपुर के ग्रामीण हिस्सों में जबरदस्त गरीबी फैली हुई है. लोगों की आजीविका मुख्य रूप से खेती से ही चलती है और यह खेती भी पूरी तरह से मौसम की मेहरबानी पर टिकी है. इलाके के ज्यादातर लोगों का यह आरोप है कि सरकार अपने वोट बैंक को मजबूत करने के लिए जिस ढंग से बस्तर

लड़की! जनाब मिल जाएगी

जशपुर जिले के गांवों में कई लोगों के पास दिल्ली की प्लेसमेंट एजेंसियों के कर्ताधर्ताओं के विजिटिंग कार्ड मिल जाते हैं. अमूमन सभी कार्डों में प्रभु ईशु मसीह का चित्र व क्रॉस छपा दिखता है. एसोसिएशन इन सरगुजा फॉर ह्यूमन एडवांसमेंट के कार्यक्रम प्रबंधक आनंद कुजूर कहते हैं, 'एजेंसियों से जुड़े हुए चालाक लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि जशपुर के एक बड़े हिस्से में ईसाई समुदाय की मौजूदगी कायम है, सो धार्मिक चित्रों का इस्तेमाल कर यह बताने का प्रयास किया जाता है कि प्लेसमेंट सर्विस पवित्र कामों में संलिप्त है.' कार्ड में रजिस्ट्रेशन संख्या के उल्लेख और कुंक, आया, सर्वेंट व नर्स की सेवा देने संबंधी सूचनाओं को